अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - मृणाल पांडे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व **01 - 20**

1.1 व्यक्ति-परिचय

1.1.1 जन्म-तिथि तथा जन्म-स्थान

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 परिवार

1.1.4 बचपन

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 नौकरी

1.1.7 मित्र-परिवार

1.1.8 पत्रकार तथा निवेदिका

1.1.9 रहन-सहन

1.1.10 साहित्यिक प्रेरणा और प्रभाव

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.2.1 बहुभाषी

1.2.2 कुशाग्र बुद्धिमत्ता

1.2.3 साहसी

1.2.4 स्वाभिमानी

1.2.5 कला-प्रेमी

1.2.6 यात्री

1.2.7 मातृभूमि से प्रेम

1.2.8 सामाजिक सरोकार से ओतप्रोत जीवन

1.2.9 युवाओं की प्रेरणा-स्रोत

1.2.10 नारी के दयनीय दशा की ज्ञाता

1.2.11 संपादिका एवं संस्थापिका

1.3 कृतित्व अर्थात मृणाल पांडे की साहित्य-यात्रा

1.3.1 उपन्यास-साहित्य

1.3.1.1 हिंदी उपन्यास

1.3.1.2 अंग्रेजी उपन्यास

1.3.2 कहानी संग्रह

1.3.2.1 संपादित कहानी-संग्रह

1.3.3 नाटक

1.3.3.1 नाट्य-रूपांतरण

1.3.4 लेख

1.3.4.1 हिंदी लेख-संकलन

1.3.4.2 अंग्रेजी लेख-संकलन

1.3.5 धारावाहिक लेखन

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान

1.4.1 मानद सदस्यत्व तथा विभूषित पद

1.4.2 प्राप्त पुरस्कार

1.4.2.1 पत्रकारिता

1.4.2.2 साहित्य

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - मृणाल पांडे के उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन 21-49

प्रास्ताविक

2.1 विरुद्ध

2.2 पटरंगपुर पुराण

2.3 देवी

2.4 रास्तों पर भटकते हुए

2.5 हमका दियो परदेस

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - विवेच्य उपन्यासों में पहाड़ी जन-जीवन **50-88**

प्रास्ताविक

3.1 पहाड़ी जन-जीवन की सांस्कृतिक-स्थिति

3.1.1 रूढ़ि-प्रथा-परंपरा

3.1.2 लोकविश्वास

3.1.3 वस्त्राभूषण

3.1.4 खान-पान

3.1.5 कला-खेल-मनोरंजन

3.1.6 त्यौहार तथा उत्सव

3.1.7 संस्कार

3.1.7.1 विवाह संस्कार

3.1.7.2 जन्म संस्कार

3.1.7.3 मृतक संस्कार

3.1.8 वर्ण-व्यवस्था

3.2 पहाड़ी जन-जीवन की पारिवारिक स्थिति

3.2.1 पहाड़ी परिवार में पति-पत्नी

3.2.2 पहाड़ी परिवार में बहू

3.2.3 पहाड़ी परिवार में युवा-वर्ग

3.2.4 पहाड़ी परिवार में बूढ़े

3.3 पहाड़ी जन-जीवन की शैक्षिक-स्थिति

3.4 पहाड़ी जन-जीवन की आर्थिक-स्थिति

3.5 पहाड़ी जन-जीवन की राजनीतिक-स्थिति

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - विवेच्य उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जन-जीवन 89-119

प्रास्ताविक

4.1 महानगर से तात्पर्य

4.2 महानगर : प्रमाप (क्राइटेरिया)

4.3 महानगरीय जन-जीवन के विविध पक्ष

4.3.1 पारिवारिक जीवन

4.3.2 आर्थिक जीवन

4.3.3 सामाजिक जीवन

4.3.4 राजनीतिक जीवन

4.4 महानगरीय जन-जीवन की समस्याएँ

4.4.1 भ्रष्टाचार की समस्या

4.4.2 मनमौजी अफसरशाही की समस्या

4.4.3 थोथेपन की समस्या

4.4.4 राजनयिकों के व्यवहार की समस्या

4.4.5 असुरक्षा की समस्या

4.4.6 वेश्या-गमन प्रवृत्ति की समस्या

4.4.7 मदिरा-पान की समस्या

4.4.8 जीवन-मूल्यों के टूटन की समस्या

4.4.9 अपनों से बिछुड़ने का दर्द

4.4.10 भीड़, आवास तथा गंदगी की समस्या

4.4.11 मतलबी रिश्ते की समस्या

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सर्वहारा वर्ग का जीवन 120-147

प्रास्ताविक

5.1 सर्वहारा-वर्ग : अर्थ एवं स्वरूप

5.1.1 सर्वहारा शब्द का कोशगत अर्थ

5.1.2 वर्ग शब्द का कोशगत अर्थ

5.1.3 सर्वहारा वर्ग : विद्वानों की धारणा

5.1.4 सर्वहारा वर्ग : स्वरूप

5.2 विवेच्य उपन्यासों में सर्वहारा पात्र

5.2.1 घर के नौकर तथा नौकरानियाँ

5.2.2 वेश्या

5.2.3 बाल-वेटर

5.2.4 कुली

5.2.5 ताँगेवाले

5.2.6 रिक्शावाले

5.2.7 डांडीवाले

5.2.8 घोड़ेवाले

5.2.9 ड्राइवर

5.3 सर्वहारा वर्ग की विशेषताएँ

5.3.1 पारिवारिक सुख से वंचित

5.3.2 विवश जीवन

5.3.3 संदेहयुक्त जीवन

5.3.4 परिश्रमी जीवन

5.3.5 अन्याय-अत्याचार से पीड़ित जीवन

5.3.6 शारीरिक दुर्बलता

5.3.7 व्यसनाधिनता

5.4 सामान्य तथा सर्वहारा लोगों का जीवन : तुलनात्मक दृष्टिक्षेप

5.4.1 सामान्य तथा सर्वहारा लोगों का जीवन : साम्य

5.4.1.1 परिश्रमशीलता

5.4.1.2 शोषित जीवन

5.4.1.3 मानवता के हिमायती

5.4.2 सामान्य तथा सर्वहारा लोगों का जीवन : वैषम्य

5.4.2.1 कार्य स्वरुप में वैषम्य

5.4.2.2 सुरक्षितता में वैषम्य

5.4.2.3 पारिवारिक स्थिति में वैषम्य

निष्कर्ष

उपसंहार **148-154**

परिशिष्ट **155-164**

संदर्भ ग्रंथ-सूची **165-174**

❑❑❑❑